International Journal of Scientific Research in Science and Technology
Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X (www.ijsrst.com)

पर्यावरण समस्या का मूल समाधान–संस्कृतशिक्षा

डॉ. दिनेश कुमार यादव
सहायकाचाय, शिक्षाशास्त्र विभाग,
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

Article Info
Volume 7, Issue 5
Page Number : 350-355

Publication Issue :
September-October-2020

Article History
Accepted : 01 Sep 2020
Published : 20 Sep 2020

शोधालेखसार –
आज की युवा पीढ़ी को स्वाभाविक रूप से बाल्यकाल से ही पर्यावरण प्रेमी बनाने की आवश्यकता है और यह कार्य सर्वाधिक प्रभावपूर्ण ढंग से करने के लिए आवश्यकता है संस्कृत साहित्य के अध्ययन की। कुछ आक्रान्ताओं के आक्रमण के पश्चात् हमारी संस्कृति का मूलाधार संस्कृत साहित्य को सुनियोजित ढंग से हमारे समाज व युवा पीढ़ी से दूर कर दिया गया। स्वतंत्रता प्राप्ति और लोकतांत्रिक सरकारों के आने के बाद भी इसकी उपेक्षा बदस्तूर जारी रही और निरन्तर चल रही है।

मुख्यशब्द– पर्यावरण, प्रकृति, वर्तमान समस्यायें, भूमि, पर्वत, नदी, वायु, प्रदूषण, संस्कृत शास्त्र।

'मा कुरु वत्स। जघन्याचरणम्
निगदति मनुजं पर्यावरणम्।।
सर्ग–विरोधि निसर्ग–दूषणम्
कथयति सततं पर्यावरणम्।।

यह तथ्य निर्विवाद है कि प्राकृतिक पर्यावरण का मानव समृद्धि ही नहीं अपितु जीवमात्र के विकास में भी उल्लेखनीय योगदान है। प्रकृति के आलिंगन में ही समुचित विकास की कल्पना की जा सकती है। प्राचीन काल में मानव पूर्ण रूप से प्रकृति पर आश्रित था। प्रकृति से ही उसे भोजन, अन्न, वस्त्र इत्यादि सुलभ थे। इसलिए मानव प्रकृति को देव रूप में पूजा करता था। जिसका प्रमाण हमारे शास्त्रों में उपलब्ध है–

"माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः।। (अथर्ववेद– 12/1/12)

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

"नमो वृक्षेभ्योहरिकेशेभ्य" (यजु. 16.17)

"औषधीनां पतये नमः" (यजु. 16.19)

ब्रजभाषा के कवि 'देव' ने पर्यावरण संतुलन के विषय में अपने कवित्त (घनाक्षरीछन्द) में लिखा है– **"विधि के बनाए जीव जैसे हैं, जहां है तहां, खेलत फिरत, तिन्हें खेलन फिरन देउ।"**

वस्तुतः हम सब प्रकृतिपुत्र हैं। प्रकृति में ही हमारा उद्भव, पालन पोषण होता है। और अन्त में हमारा भौतिक शरीर भी प्रकृति में ही विलीन हो जाता है।

पर्यावरण का अर्थ–

हमें चारों ओर से जिसने आवृत्त किया हुआ है तथा जो हमारे ऊपर आच्छादित है वह पर्यावरण है। अर्थात् जो हमारे चारों और स्थित है वह पर्यावरण प्रकृति के साथ ही भौतिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक रूप में हमारे चारों ओर विद्यमान है। जिसमें प्रकृति के रूप में शस्य श्यामला भूमि, हरित वन, लहलहाते वृक्ष, उन्नत प्रकृति का खजाना, पर्वत निर्मल नदी व तडाग तथा प्राणदायिनी सुगन्धित वायु से हम सर्वदा उपकृत हैं।

पर्यावरण की वर्तमान समस्यायें–

प्रकृति से ही हम सर्वाधिक लाभान्वित होते हैं, और उसी प्रकृति को मानव जाने–अनजाने में नष्ट करते हुए स्वयं को विनाशमार्ग पर ले जा रहा है ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार लकड़हारा जिस शाखा पर बैठा है, उसी शाखा को काट रहा हो।

आज पर्यावरण सम्बन्धित किसी भी पुस्तक, समाचार–पत्र, वेबसाइट इत्यादि के अनुशीलन से ज्ञात होता है कि प्रायः सर्वत्र प्राकृतिक प्रदूषणों को विभिन्न रूपों में दर्शाया गया है। ये प्राकृतिक प्रदूषण वायु प्रदूषण, जलप्रदूषण, मृदा प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण, नाभिकीय प्रदूषण के रूप में विशद रूप में उपस्थापित किये जा रहे हैं तथा इनके कारणों में जनसंख्या वृद्धि, कीटनाशकों–उर्ववरकों का प्रयोग, वाहनों की संख्या में अनियन्त्रित वृद्धि युद्ध सामग्री की प्रतिस्पर्धात्मक वृद्धि इत्यादि को भली भांति समझाने का प्रयास सर्वत्र दृष्टिगोचर है।

परन्तु इन सभी प्रदूषणों का मूल कारण ढूंढने का प्रयास दिखाई नहीं देता है। इन सभी बाह्य प्रदूषणों का प्रमुख कारण है आन्तरिक सामाजिक कारण। सामाजिक परिदृश्य में बदलाव के परिणामस्वरूप ही ये भयावह स्थितियां उत्पन्न हो रही हैं।

पर्यावरण समस्या का मूल कारण–

क्या प्राचीन काल में मनुष्य नहीं थे? क्यों उस समय प्राकृतिक असंतुलन नहीं देखने को मिलता था? आज जो स्थितियां उत्पन्न हुई हैं। इसके मूल में जायेंगे तो हमें ज्ञात होगा कि पर्यावरण प्रदूषण के नाम पर **हम केवल पेड़ की शाखाओं पर दवाई डाल रहे हैं, जबकि बीमारी जड़ों में है।**

इस समस्या का अत्यन्त आसान उपाय हमारे संस्कृत शास्त्रों के अनुशीलन से हमें ज्ञात होता है। हमारे संस्कृत वाङ्मय में प्रत्येक स्तर पर स्वाभाविक रूप से प्रकृति के रक्षण पर पर्याप्त बल दिया गया है फिर चाहे वह हमारे वेद–पुराण–उपनिषद् हों या फिर तदुत्तरवर्ती साहित्य रामायण, महाभारत या अन्य महाकाव्य हों, इन सभी ग्रन्थों में प्रकृति के सजीव स्वरूप को प्रतिपादित करने के साथ ही इसकी रक्षा की सहज शिक्षा हमें प्राप्त होती है।

वस्तुतः आज भौतिकपर्यावरण के साथ ही सामाजिक पर्यावरण को स्वस्थ व सुदृढ़ बनाने की अत्यधिक आवश्यकता है।

आज की युवा पीढ़ी को स्वाभाविक रूप से बाल्यकाल से ही पर्यावरण प्रेमी बनाने की आवश्यकता है और यह कार्य सर्वाधिक प्रभावपूर्ण ढंग से करने के लिए आवश्यकता है संस्कृत साहित्य के अध्ययन की। कुछ आक्रान्ताओं के आक्रमण के पश्चात् हमारी संस्कृति का मूलाधार संस्कृत साहित्य को सुनियोजित ढंग से हमारे समाज व युवा पीढ़ी से दूर कर दिया गया। स्वतंत्रता प्राप्ति और लोकतांत्रिक सरकारों के आने के बाद भी इसकी उपेक्षा बदस्तूर जारी रही और निरन्तर चल रही है।

जब एक बालक को बाल्यावस्था में ही **''द्यौः शान्तिः पृथिवीशान्तिः''** इत्यादि प्रकृति के संरक्षण की शिक्षा आत्मसात् करवा दी जायेगी तो क्या वह प्राकृतिक सन्तुलन के लिए प्रयासरत नहीं होगा? जब सूर्यास्त के पश्चात् वृक्ष को छूने पर पाप होने की शिक्षा उसे सहज रूप से समाज में दे दी जायेगी तो क्या वह वृक्षछेदन जैसे घोर पाप का भागीदार बनने की कोशिश करेगा? कदापि नहीं!

इसलिए सामाजिक पर्यावरण के सुधार के लिए संस्कृत साहित्य की पर्यावरणीय स्वाभाविकी शिक्षा की आज के परिवेश में अत्यन्त आवश्यकता है।

संस्कृतसाहित्य में विद्यमान पर्यावरण समस्या का समाधान–

फलदानां तु वृक्षाणां छेदने जप्यमृक्शतम्। (मनु. 11/142)

गुल्मवल्ली–लतानां च पुष्पितानां च विरुधाम्।।

हमारे यहाँ तो वृक्षों को देवता का रूप दे दिया गया था। गूलर को ब्रह्मा का प्रतीक, पीपल को विष्णु का तथा वटवृक्ष को शिव का स्वरूप बतलाया गया है। इसका वैज्ञानिक कारण है कि पीपल रात दिन ऑक्सीजन देता है अतः इसे पालनकर्ता के रूप में विष्णु कहा गया। जबकि गूलर के एक फल में इतने बीज

होते हैं कि उसकी सृष्टि करने की क्षमता के कारण उसे ब्रह्मा के रूप में माना गया है। इसलिए प्राचीन साहित्यानुसार यह धारणा रही है कि घर में या घर के पास लगा पेड़ उसी प्रकार जीवन भर आपकी सहायता करेगा जिस प्रकार पत्नी या पुत्र करते हैं।

विष्णुपुराण में उल्लेखित है कि दस कुएं खोदने से जितना हित होता है वह एक बावड़ी बनाने से हो जाएगा। दस बावड़ी बनाने से जो फायदा होगा वह एक तालाब बनाने से होगा। एक योग्य पुत्र दस तालाब जितना हितकर होगा किन्तु एक पेड़ दस पुत्रों के समान सदा आपका साथ देगा–

दशकूपसमा वापी दशवापिसमो ह्रदः।

दशह्रदसमः पुत्रो दशपुत्र–समो द्रुमः।। (वि.पु.)

प्रत्येक वैदिक की जुबान पर चढ़ा शान्तिपाठ का सुप्रचलित मंत्र आकाश, अन्तरिक्ष, जल, पृथिवी, फसलें, वनस्पतियां, खगोल, इलेक्ट्रॉन या अभौतिक तरंगे–इन सब में शान्ति की शुभाशंसा करता है– **''ऊँ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिर्वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिः।''**

अथर्ववेद में जो लम्बे सूक्त हैं, उनमें से पृथिवी सूक्त है जिसमें 63 मन्त्र दिए गए हैं। पर्यावरण की चिन्ता करने वालों को इस सूक्त को राष्ट्रगीत की तरह विश्वगीत घोषित कर देना चाहिए–

सत्यं बृहदृततमुग्रं दीक्षा तपो ब्रह्म यज्ञः पृथिवीं धारयन्ति।

गरुड़पुराण में पापियों के लिए नरक प्राप्ति और पुण्यशालियों के लिए स्वर्ग–सुख का निरूपण करते हुए कहा गया है, जिसमें भी प्रकारान्तर से पर्यावरण संरक्षण के लिए ही मानव को प्रेरित किया है कि किस प्रकार का पापी किस प्रकार कैसे नरक को प्राप्त करेगा?–

कूपानां च तडागानां वापीनां देव–सद्मनाम्।

पंजागृहाणां भेत्तारस्ते वै नरकगामिनः।। (4/33 ग.पु.)

ये शरीरं मलं वह्नौ प्रक्षिपन्ति जलेऽपि च।

आरा मे पथि गोष्ठे वा ते वै नरकगामिनः।। (ग.पु. 4/42)

हरीतिमा पृथ्वी के लिए संजीवनी है। वनस्पति से न केवल पृथ्वी की शोभा बढ़ती है, अपितु पृथ्वी पर विद्यमान जीवों के लिए भी वह अमृतरूप है। इसलिए वनस्पति की प्रशंसा करके उसे अधिकाधिक बढ़ाने का निर्देश दिया गया है। स्कन्दपुराण के अनुसार तो विश्व वृक्षमय ही है–

आदौ सर्वं वृक्षमयं पूर्वं विश्वमजायत।

एते वृक्षाः महाश्रेष्ठाः सर्वे देवांशसम्भवाः।।

शतपथ ब्राह्मण में सूर्य की रश्मियां गन्दगी को दूर करते हुए पवित्र करने वाली कहा गई हैं–

एते वा उत्पवितारो सत्सूर्यस्य रश्मयः। (श.ब्रा. 1/1/3/6)

ऋग्वेद में प्रतिपादित किया गया है– ''प्रकृति अथवा सृष्टि के नियमों के परिज्ञान अथवा अनुसरण से बुराइयां नष्ट हो जाती है।''

ऋतस्य धीतिर्विजनानि हन्ति।

लौकिक संस्कृत साहित्य में महाकवि कालिदास अग्रणी हैं। पर्यावरण चर्चा के प्रसङ्ग में कालिदास का साहित्य अवलोकनीय है। कालिदास के रचनाओं में **''अभिज्ञानशाकुन्तम्''** अन्यतम है। वहाँ मंगलाचरण पद्य में महाकवि कालिदास शिवजी की अष्टमूर्ति का विवेचन करते हुए पर्यावरण की ओर संकेत करते हैं–

या सृष्टिः स्रष्टुराद्या वहति विधिहुतं या हविर्या च होत्री

ये द्वे काले विधत्तः श्रुतिविषयगुणा या स्थिता व्याप्य विश्वम्।

यामाहु सर्वबीजप्रकृतिरिति यथा प्राणिनः प्राणवन्तः

प्रत्यक्षाभिः प्रपन्नस्तभिरवतु वस्ताभिरष्टाभिरीशः।।

इसके अतिरिक्त उपर्युक्त ग्रन्थ में शकुन्तला के लालन पालन के दौरान प्रकृति का समग्र विवेचन वहां प्रतिपादित है। शकुन्तला के विदाई के समय प्रकृति की जीवटता को उपस्थापित किया गया है। जो समस्त प्रकृति व पर्यावरण को ही संकेत करता है। भारतीय संस्कृत ग्रन्थों में प्रकृति व पर्यावरण का सहज वर्णन उपलब्ध है।

अतः संस्कृत ग्रन्थों व शिक्षा को छात्रों को सहजभाव से अध्यापन करवाने तथा अध्ययनोपरान्त छात्रों के द्वारा उसको आत्मसात् किये जाने से परिणाम पर्यावरण संतुलन व प्राकृतिक संरक्षण के लिए अधिक सकारात्मक होने की प्रबल सम्भावना है। इसलिए संस्कृत शिक्षा के द्वारा वर्तमान में गम्भीर समस्या के रूप में समस्त विश्व के समक्ष व्याप्त पर्यावरण समस्या का सटीक निदान किया जा सकता है।

संस्कृत साहित्य में वर्णित प्रकृति चित्रण को चार पंक्तियों के माध्यम से प्रस्तुत किया जा सकता है

इस भारत–भू के आंचल को क्यों नजर किसी की लगी आज।
जो शस्य–श्यामला धरती थी व रूखी–सूखी बनी आज।
वह कालिदास का मेघदूत जो उमड़ा करता था नभ पर।
वह श्याम घटा का जादू था जो आया ना कवि के मुख पर।।

श्रृंगार प्रकृति का सुन्दरतम कविताएं बन कर ढलता था।
संस्कृत भाषा का काव्य जगत् वन और उपवन में पलता था।।
ऋषियों की कुटिया शकुन्तला की पालनहारी गोद बनी।
फूलों की माला ऋषिसुता के कोमल मन की गोद बनी।।
वल्लरियों के सुन्दर झूले सुख से झूली थी शकुन्तला।
सब अलंकार थे फूलों के मन में फूली थी शकुन्तला।।
वह सरस काव्य अब भी हर्षित कर देता है सबके मन को।
लौटा लाएं आओ फिर से हम प्रकृति के सुन्दर धन को।।
फिर झरने, नदियां, फूल सजें इस आर्य भूमि के आंगन में।
फिर संस्कृति का श्रृंगार करें हम अखिल विश्व के प्रांगण में।।
यदि रोक सकेंगे हम अब भी धरती माता का यह दोहन।
तो पा लेंगे हरी–भरी वह सुखद गोद जो मनमोहन।।
फिर से उपवन महकेंगे और वे मेघदूत आयेंगे घिर।
जो प्रेम संदेशा लायेंगे खुशियां बन कर छायेंगें फिर।।
नदियों की होगी फिर कल–कल पंछी भी गीत सुनायेंगें।
जो बीत चुका वह स्वर्णिम–युग हम फिर से लौटा लायेंगे।।

सन्दर्भग्रन्थसूची

- श्रावणी (पर्यावरण विशेषाङ्क) निदेशालय संस्कृत–शिक्षा, राजस्थान– 2012
- पर्यावरण शिक्षा, श्रीमती निर्मला पाणिग्राही, ओजस्वी प्रकाशन, भुवनेश्वर– 2009
- पर्यावरण शिक्षा, डॉ.कौशलेश शर्मा, तीरतरम प्रकाशन, भुवनेश्वर, 2015
- पर्यावरण मीमांसा, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, एकलव्य परिसर अगरतला, 2014, 2015